प्राचीन भारत में मूर्तकिला

//

प्राचीन भारत में मूर्तिकला

लोक संस्कृति से उपजी भारतीय मूर्तिकला, प्रारंभ में कुम्हार के चाक पर मिट्टी से निर्मित, टेराकोटा और विभिन्न शैलियों में विकसित हुई, जिसमें देवताओं का चित्रण किया गया और बौद्ध, जैन तथा हिंदू स्थापत्य को सजाया गया।

परिचय

- कला की छोटी 3-D कृतियाँ
- सामान्यतः एक ही प्रकार की सामग्री से निर्मित होती हैं

हड़प्पा काल

- 3-D कृतियों के निर्माण में बेहद कुशल
- सामान्य पशु रूपांकन - एकसिंग गैंडा, कूबड़ वाला बैल, गैंडा, बाघ, हाथी, भैंस, बाइसन, बकरी, मगरमच्छ (गाय के कोई साक्ष्य नहीं)
- **कॉंस्य आकृतियाँ**
  - "लॉस्ट वैक्स तकनीक" या "साइर पर्ड्यू (Cire Perdue)" का उपयोग करके निर्मित की गई
  - **उदाहरण:** मोहन जोदड़ो की कॉंस्य की बनी नृत्य करने वाली लड़की की मूर्ति, कालीबंगन का कॉंस्य बैल, आदि।

मौर्य काल

- मूर्तियाँ मुख्य रूप से स्तूपों की सजावट के लिये, तोरण और मेधी में और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में उपयोग की जाती हैं
- **उदाहरण:** यक्ष और यक्षिणी
  - जैन, हिंदू और बौद्ध धर्म से संबंधित पूजा की वस्तुएँ
- **मृद्भांड:** उत्तरी काले पॉलिश वाले बर्तन (NBPW)
  - इसे काले रंग और अत्यधिक चमकदार विशेषता वाली विलासिता की वस्तुओं के रूप में उपयोग किया जाता था

मौर्योत्तर काल

- **तीन प्रमुख शैलियाँ**
  - **गांधार-** ग्रीक प्रभाव वाली शैली, मुख्य रूप से बौद्ध भित्तिचित्र, कुषाण शासकों द्वारा संरक्षित, उत्तर पश्चिम सीमांत (कंधार), नीले-भूरे बलुआ पत्थर (बाद में मिट्टी और प्लास्टर) का इस्तेमाल किया गया
  - **मथुरा** - स्वदेशी रूप से विकसित, चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर का उपयोग, हिंदू धर्म, जैन धर्म और बौद्ध धर्म से प्रभावित; कुषाण शासकों द्वारा संरक्षित, मथुरा, सोंख एवं कंकलीतला और उसके आसपास विकसित
  - **अमरावती** - स्वदेशी रूप से विकसित, सफेद संगमरमर का उपयोग, मुख्य रूप से बौद्ध प्रभाव, सातवाहन शासकों द्वारा संरक्षित, कृष्णा-गोदावरी निचली घाटी में विकसित, अमरावती और नागार्जुनकोंडा के आसपास विकसित।
- मौर्योत्तर काल में मूर्तिकला स्थापत्य अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई

गुप्त काल

- सारनाथ के आसपास मूर्तिकला की नवीन शैली विकसित हुई
- भूरा-बलुआ पत्थर और धातु का उपयोग, मूर्तियाँ बेदाग ढंग से तैयार की गई हैं और उनमें किसी भी प्रकार की नग्नता का अभाव है
- **उदाहरण:** बिहार में सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की ताँबे की मूर्ति

चोल काल

- चोल मंदिरों में मूर्तियाँ, विशेषकर तांडव मुद्रा में नटराज के रूप में निर्मित होती थीं, जिनकी सजावट पर ज़ोर दिया जाता था।

दृष्टि The Vision
Drishti IAS

और पढ़ें: मूरतियाँ

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sculptures-in-ancient-india-1